بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 25.11.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ा-ए-राशिद सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 25 नवम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला के जीवन परिचय के विभिन्न वृत्तांत बयान हो रहे थे। इसके अंतर्गत उनकी जन सेवा तथा निर्धनों को खाना खिलाने के बारे में मिलता है कि इस्लाम क़बूल करने से पहले भी हज़रत अबू बकर रज़ी. क़ुरैश क़बीले के अति उत्तम लोगों में गिने जाते थे। लोगों को जो भी कठिनाईयाँ पेश आतीं थीं, लोग उनसे सहायता लिया करते थे। मक्का में बड़ी बड़ी दावतें तथा मेहमानों की सेवा करते किया करते थे। इस्लाम से पहले के दौर में क़ुरैश के प्रतिष्ठित तथा उत्तम लोगों में माने जाते थे। लोग अपनी समस्याएँ तथा मामले लेकर उनके पास आया करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. निर्धनों तथा दुर्बलों के लिए अति दयालु थे, सर्दियों में कम्बल ख़रीद कर दुर्बल लोगों में बांटा करते थे।

एक रिवायत है कि ख़िलाफ़त के पद पर सुशाभित हान से पहले आप रज़ी. एक लावारिस परिवार की बकरियों का दूध निकाला करते थे और ख़लीफ़ः बनने के बाद भी छः महीने तक पहले की भांति यही सेवा करते रहे जबतक कि आप रज़ी. ने मदीने में आकर रहना आरम्भ न कर दिया। हज़रत उमर रज़ी. मदीने के किनारे रहने वाली एक बूढ़ी तथा नेत्र-हीन महिला का ध्यान रखा करते थे। आप रज़ी. उसके लिए पानी लाते तथा उसके काम काज करते थे, एक बार जब आप रज़ी. उसके घर गए तो पता चला कि कोई व्यक्ति आप रज़ी. से पहले ही उसके काम कर गया। अगली बार आप रज़ी. उसके घर जल्दी गए और छुप कर बैठ गए तो देखा कि यह आप रज़ी. हैं जो उस बुढ़िया के घर आते थे और उस समय हज़रत अबू बकर रज़ी. ख़लीफ़ः थे। इस पर हज़रत उमर रज़ी. ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम, यह आप रज़ी. ही हो सकते थे, अर्थात इस नेकी के काम में मुझसे बढ़ने वाले आप रज़ी. ही हो सकते थे।

एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ी. ने बताया कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके पास दो लोगों का खाना हो वह तीसरे को ले जाए तथा जिसके पास चार आदमियों का खाना हो वह पाँचवें को ले जाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. तीन आदमियों को ले आए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस को ले गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मेहमानों को जो खाना पेश किया वह मेहमानों के खाने के बाद भी इतना बच रहा कि पहले से भी तीन गुना अधिक लगता था। हज़रत अबू बकर रज़ी. वह खाना नबी करोम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर ले गए तथा वहाँ भी विशिष्ट लोगों की संख्या ने वह खाना खाया। यह बरकत अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के खाने में डाली।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के बेटे अब्दुर्रहमान रज़ी. भी ख़िलाफ़त के पात्र थे। लोगों ने कहा कि उनका स्वभाव हज़रत उमर रज़ी. से विनम्र है तथा योग्यता भो उनसे कम नहीं। उनको आप रज़ी. के बाद ख़लीफ़ः बनना चाहिए। परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उमर रज़ी. को ही ख़िलाफ़त के लिए चुना, बावजूद इसके कि हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. के स्वभाव में अन्तर था। अतः हज़रत अबू बकर रज़ी. ने ख़िलाफ़त से कोई व्यक्तिगत लाभ प्राप्त नहीं किया अपितु आप रज़ी. समाज सेवा का ही बड़ाई मानते थे। सूफ़ियों की एक रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के एक सेवक से पूछा कि कौन कौन से काम तेरा स्वामी किया करता था ताकि मैं भी वह काम करूँ। सेवक ने बताया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. रोज़ाना रोटी लेकर अमुक दिशा की ओर जाया करते थे। अतएव हज़रत उमर रज़ी. उस सेवक के साथ उसी ओर खाना लेकर चले गए, तो क्या देखते हैं कि एक गुफा में एक अपंग अंधा जिसके हाथ पाँव न थे, बैठा हुआ था। हज़रत उमर रज़ो. ने उसके मुंह में एक निवाला डाला तो वह रो पड़ा और कहने लगा कि अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर रज़ी. पर दया करे, वे भी क्या आदमी थे। हज़रत उमर रज़ी. ने पूछा कि तुम्हें कैसे पता चला कि हज़रत अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया है? उसने कहा कि मेरे मुंह में दांत नहीं हैं, इस लिए अबू बकर रज़ी. निवाले को चबा कर मेरे मुंह में डाला करते थे, आज निवाला कठोर है इस लिए मैंने समझा कि मेरे मुंह में निवाला डालने वाला कोई और व्यक्ति है तथा अबू बकर रज़ी. कभी नाग़ा नहीं किया करते थे,अब जो नागा हुआ तो निश्चित ही अबू बकर रज़ी. इस दुनिया में नहीं है। अतएव वह कौनसी चीज़ है हो बादशाहत से हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पाई है? एक विशिष्टता थी जो उन्हें मानव सेवा से मिली।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़, दो भाग शरीअत के हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर देखो कि कितनी लम्बी आयु समाज की सेवा में व्यतीत की। हज़रत अली रज़ी. की हालत देखो कि इतने पेवन्द लगाए कि जगह न रही। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक बुढ़ियों को हलवा खिलाना अपना नियम बना रखा था, सोचो कि कैसा उत्तम प्रबन्ध था। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया तो उस बुढ़िया ने कहा कि आज अबू बकर रज़ी. का निधन हो गया। पड़ौसियों ने पूछा कि तुझे इलहाम हुआ है। उसने कहा- नहीं बल्कि आज अबू बकर रज़ी. हलवा लेकर नहीं आया, इस लिए मुझे पता चल गया कि उसकी मृत्यु हो गई। अर्थात जीवित रहते सम्भव

न था कि किसी अवस्था में हलवा न पहुंचे। देखो कितनी बड़ी सेवा थी, ऐसा ही सबको चाहिए कि समाज सेवा करे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. शौर्य एवं वीरता की प्रतिमा थे। बड़ी बड़ी आशंका को इस्लाम के लिए अथवा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्नेह के कारण कुछ न समझते थे। मक्का के जीवन में जब उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात के लिए कठिनाई अथवा आशंका का कोई अवसर देखा तो आप स. की सुरक्षा के लिए दीवार बन कर सामने खड़े हो जाते। अबी तालिब की घाटी में तीन साल तक बन्दी बने रहने का ज़माना आया तो दृढ़ संकल्प तथा बहादुरी के साथ वहाँ उपस्थित रहे। हिजरत के समय भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत एवं साथ का सौभाग्य मिला, यद्यपि जान का जोखिम था। जितने भी युद्ध हुए, न केवल आप रज़ी. उनमें शामिल हुए बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा का कर्त्तव्य भी निर्वाह किया।

हज़रत अली रज़ी. ने एक बार लोगों से पूछा कि सबसे अधिक दलेर कौन है? तो लोगों ने कहा कि आप रज़ी. हैं, किन्तु हज़रत अली रज़ी. ने फ़रमाया कि सबसे बहादुर अबू बकर रज़ी. हैं, क्यूँकि बदर के युद्ध में अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तलवार सूंते खड़े रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई मुशरिक पहुंचने से पहले आप रज़ी. से मुक़ाबला करेगा। इसी प्रकार ओहद की लड़ाई में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की झूठी ख़बर फैली तो सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ी. भीड़ को चीरते हुए रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे। कहा जाता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस समय केवल ग्यारह सहाबा किराम मौजूद थे जिनमें से हज़रत अबू बकर रज़ी. का नाम भी आता है। ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहरे में घाटी पर मौजूद कुछ जान की बाज़ी लगाने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ी. भी एक थे। खंदक़ वाले युद्ध में हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ साथ थे। हुदैबियः की सन्धि के अवसर पर जान निछावर करने के लिए बैअत करने वालों में तो आप रज़ी. थे ही परन्तु हुदैबियः की सन्धि में भी जब समझौता लिखा गया तो जिस ईमान के साहस एवं दृढ़ संकल्प तथा विवेक व आज्ञा पालन व इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पेश किया, हज़रत उमर रज़ी. अपने बाद के जीवन में उसको नहीं भूले।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि एक बार काफ़िरों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गले में पटका डालकर ज़ोर से खींचना शुरु किया। हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस बात का पता चला तो दौड़े हुए आए तथा काफ़िरों को हटा कर फ़रमाया कि ऐ लोगा! तुम्हें ख़ुदा का भय अनुभव नहीं होता कि तुम एक व्यक्ति को केवल इस कारण से मारते पीटते हो कि वह कहता है कि अल्लाह मेरा रब है, वह तुमसे कोई सम्पत्ति नहीं मांगता तो फिर क्यूँ उसे मारते हो। सहाबी रज़ी. कहते हैं कि हम अपने ज़माने में सबसे बहादुर हज़रत अबू बकर रज़ी. को समझते थे, क्यूँकि दुश्मन जानता था कि यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मार लिया तो इस्लाम नष्ट हो जाएगा और हमने देखा कि हज़रत अबू बकर रज़ी. सदैव रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास खड़े होते थे ताकि जो कोई आप स. पर हमला करे तो उसके सामने अपना सीना कर दें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार जिब्रईल बैतुल मुक़द्दस की यात्रा में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, उसी तरह हिजरत में अबू बकर रज़ी. आप स. के साथ थे, जो मानो उसी तरह आप स. के आधीन थे जिस तरह जिब्रईल ख़ुदा तआला के आदेशों का पालन करता है। जिब्रईल का अर्थ ख़ुदा तआला का पहलवान होता है। हज़रत अबू बकर रज़ी. भी अल्लाह तआला के विशेश बन्दे थे तथा दीन के लिए एक निडर पहलवान का स्तर रखते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने निधन से पूर्व हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि मेरे दिल में बार बार यह इच्छा जागती है कि मैं लोगों से कह दूँ कि वह मेरे बाद अबू बकर रज़ी. को ख़लीफ़ः बना दें, परन्तु फिर रुक जाता हूँ क्यूँकि मेरा दिल जानता है कि मेरे देहान्त के बाद ख़ुदा तआला तथा उसके मोमिन बन्दे अबू बकर रज़ी. के अतिरिक्त किसी अन्य को ख़लीफ़ः नहीं बनाएँगे, अतः ऐसा ही हुआ।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपने जीवन में जो कार्य किया वह उन्हीं को शोभा देता था, कोई अन्य व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता था, यद्यपि आप रज़ी. अत्यंत विनम्र हृदय वाले व्यक्ति थे किन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद जब कुछ लोगों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया, लगभग पूरा अरब देश इस्लाम से विमुख हा गया तथा ऐसे कठिन समय पर हज़रत उमर रज़ी. सहित अन्य सहाबियों रज़ी. ने यह भी कहा कि इनके साथ नर्मी की जाए। पहले काफ़िरों को आधीन कर लें फिर इनका सुधार कर लेंगे, परन्तु अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि इब्ने क़हाफ़ा का क्या अधिकार है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिए हुए आदेश को बदले, मैं तो उनसे उस समय तक लड़ूंगा जब तक ये लोग पूरी तरह ज़कात न दें। उस अवसर पर सहाबियों को पता चला कि ख़ुदा का बनाया हुआ ख़लीफ़ः कितना साहस तथा दलेरी रखता है। अंततः हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनको आधीन किया तथा उनसे ज़कात लेकर छोड़ी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सहाबियों की दशा देखो कि जब परीक्षा की घड़ी आई तो जो कुछ किसी के पास था, अल्लाह की राह में दे दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. कम्बल पहन कर आ गए, अर्थात केवल एक कम्बल पहन लिया और सब कुछ ख़ुदा की राह में दे दिया, फिर अल्लाह तआला ने उसका प्रतिफल भी दिया। अर्थात यह है वास्तविक गुण कि भलाई एवं आध्यात्मिक आनन्द से लाभान्वित होने के लिए वही धन काम आ सकता है जो ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि शेष इन्शाअल्लाह जारी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131